I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

खोखले गाँव: कुमाऊँ के ग्रामीण समाज का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. सत्यमित्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author: *डॉ. सत्यमित्र सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19969563

सारांश

यह अध्ययन उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में उभर रही "खोखले गाँव " की समस्या का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पिछले कुछ दशकों में तीव्र प्रवासन (Migration), जनसंख्या में गिरावट तथा संरचनात्मक परिवर्तन ने ग्रामीण समाज की पारंपरिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। यद्यपि गाँवों में भौतिक संरचनाएँ—जैसे घर और भूमि—अभी भी विद्यमान हैं, किंतु सामाजिक जीवन की सक्रियता में उल्लेखनीय कमी आई है, जिससे "खोखलापन" उत्पन्न हुआ है।

यह शोध मिश्रित पद्धति (Mixed Method) पर आधारित है, जिसमें मात्रात्मक (Quantitative) एवं गुणात्मक (Qualitative) दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली (Questionnaire), गहन साक्षात्कार (In-depth Interview) तथा समूह चर्चा (Focus Group Discussion) के माध्यम से संकलित किए गए, जबकि द्वितीयक स्रोतों में भारत की जनगणना (Census of India, 2011) एवं सरकारी रिपोर्टें शामिल हैं। अध्ययन में छह गाँवों के 120 परिवारों का चयन किया गया, जो प्रवासन की विभिन्न अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि प्रवासन के कारण युवाओं की संख्या में कमी, ग्रामीण परिवारों का स्त्रीकरण (Feminization), तथा बुजुर्गों में सामाजिक एकाकीपन बढ़ा है। संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हो रहा है और सामुदायिक संस्थाएँ निष्क्रिय होती जा रही हैं। साथ ही, सांस्कृतिक परंपराएँ और स्थानीय पहचान भी क्षीण हो रही हैं, जो व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संकट की ओर संकेत करती हैं।

अंततः, यह अध्ययन दर्शाता है कि "खोखले गाँव" केवल जनसांख्यिकीय (Demographic) समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संस्थागत विघटन की बहुआयामी प्रक्रिया है। यह एक विरोधाभास को भी रेखांकित करता है, जहाँ प्रवासन आर्थिक लाभ (प्रेषण धन—Remittance) तो प्रदान करता है, किंतु सामाजिक एकता को कमजोर करता है। अतः सतत एवं समावेशी ग्रामीण विकास हेतु संदर्भ-विशिष्ट नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 08-04-2026
- **Accepted:** 27-04-2026
- **Published:** 30-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 967-971
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह स. खोखले गाँव: कुमाऊँ के ग्रामीण समाज का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):967-971.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: खोखले गाँव, प्रवासन, कुमाऊँ, सामाजिक विघटन, ग्रामीण समाज, जनसंख्या ह्रास।

© 2026 डॉ. सत्यमित्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण समाज, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों का सामाजिक जीवन, लंबे समय तक सामुदायिक एकजुटता, पारस्परिक सहयोग और सांस्कृतिक निरंतरता पर आधारित रहा है। उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में स्थित पहाड़ी गाँव इस परंपरा के महत्वपूर्ण उदाहरण रहे हैं, जहाँ परिवार, समुदाय और संस्कृति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए थे। किंतु पिछले कुछ दशकों में इन गाँवों के सामाजिक ढाँचे में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं, जिनका प्रमुख कारण प्रवासन है। रोजगार के सीमित अवसर, कृषि की अलाभकारी स्थिति, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा आधुनिक जीवन-शैली की आकांक्षाएँ लोगों को अपने गाँवों से बाहर जाने के लिए प्रेरित करती हैं। परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में युवा और श्रमशील आबादी शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास कर रही है।

इसी संदर्भ में 'खोखले गाँव' (Hollow Villages) की अवधारणा उभरती है — ऐसे गाँव जहाँ घर, भूमि और भौतिक संरचनाएँ तो मौजूद हैं, किंतु सामाजिक जीवन की सक्रियता, सामुदायिक भागीदारी और सांस्कृतिक ऊर्जा का अभाव होता जा रहा है। यह शोध इस अवधारणा का बहु-आयामी समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. साहित्य समीक्षा

2.1 शास्त्रीय समाजशास्त्रीय अध्ययन

Durkheim (1893) ने 'The Division of Labour in Society' में सामाजिक एकता (social solidarity) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए बताया कि जब सामूहिक चेतना और पारस्परिक बंधन कमजोर होते हैं, तो 'अनोमी' (anomie) की स्थिति उत्पन्न होती है। कुमाऊँ के 'खोखले गाँव' इसी अनोमिक स्थिति की ओर संकेत करते हैं।

Thomas और Znaniecki (1918–1920) ने 'The Polish Peasant in Europe and America' में प्रतिपादित किया कि प्रवासन केवल स्थानांतरण नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन के विघटन की प्रक्रिया है।

2.2 प्रवासन संबंधी सिद्धांत

Ravenstein (1885, 1889) ने 'Laws of Migration' में प्रवासन को मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित और ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर होने वाली प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया। Lee (1966) ने 'push-pull' मॉडल के माध्यम से प्रवासन को समझाया, जो कुमाऊँ क्षेत्र में स्पष्ट रूप से लागू होता है। Massey (1990) ने 'cumulative causation' सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें प्रवासन को एक आत्म-प्रवर्धित (self-reinforcing) प्रक्रिया के रूप में देखा गया।

2.3 अंतरराष्ट्रीय 'Hollow Village' अध्ययन

चीन में 'Hollow Villages' (Kongxin Cun) की समस्या व्यापक रूप से अध्ययन की गई है। Long et al. (2012) और Liu et al. (2014) ने चीन में ऐसे गाँवों का भूमि उपयोग, जनसंख्या ह्रास और सामाजिक विघटन के संदर्भ में विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि यह केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक संकट भी है। यह अंतरराष्ट्रीय अनुभव कुमाऊँ क्षेत्र के लिए भी प्रासंगिक है।

2.4 उत्तराखंड और कुमाऊँ क्षेत्रीय अध्ययन

पाठक, पंत और महरजन (Maharjan) (2022) ने उत्तराखंड में जनसंख्या-ह्रास और प्रवासन के प्रभावों का विश्लेषण किया। Kumar (2017) ने अल्मोड़ा जिले में प्रवासन के कारणों में कृषि संकट और अवसंरचना की कमी को प्रमुख पाया। Chandra और Mukherjee (2018) ने कुमाऊँ क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया।

उपलब्ध साहित्य की प्रमुख सीमा यह है कि अधिकांश अध्ययन मुख्यतः आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय पहलुओं पर केंद्रित हैं। सामाजिक विघटन, सांस्कृतिक क्षरण और सामुदायिक जीवन के पतन को समग्र रूप में कम समझा गया है — यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन भरने का प्रयास करता है।

3. सैद्धांतिक ढाँचा

प्रस्तुत अध्ययन एक बहु-सैद्धांतिक (multi-theoretical) दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें चार प्रमुख ढाँचों का समेकित उपयोग किया गया है:

सिद्धांत	प्रमुख विचारक	अध्ययन में योगदान
पुश-पुल सिद्धांत	ली (1966)	प्रवासन के कारण क्यों होता है
संचयी कारणता	मैसी (1990)	प्रवासन क्यों निरंतर बढ़ता है
सामाजिक विघटन	थॉमस एवं ज़्नानेकी	गाँव में क्या टूटता है
सामाजिक एकता	दुर्खीम (1893)	सामुदायिक बंधन कैसे कमजोर होते हैं

सामाजिक विघटन सिद्धांत (Social Disintegration Theory) के अनुसार जब किसी समाज की संस्थाएँ और संबंध-प्रणालियाँ कमजोर होती हैं, तब सामाजिक असंतुलन उत्पन्न होता है। Durkheim के अनुसार कुमाऊँ के पारंपरिक गाँव 'mechanical solidarity' पर आधारित थे, जहाँ सामूहिक श्रम, पारस्परिक सहयोग और सांस्कृतिक एकता प्रमुख थी। प्रवासन के बाद यह एकता समाप्त हो रही है, जबकि आधुनिक एकता ('organic solidarity') विकसित नहीं हुई — समाज एक 'transition crisis' में फँस गया है।

इस अध्ययन में 'खोखले गाँव' को dependent variable तथा प्रवासन को independent variable के रूप में देखा गया है। विश्लेषण की अनुक्रमिक प्रक्रिया इस प्रकार है: प्रवासन → जनसंख्या ह्रास → परिवार विखंडन → सामुदायिक विघटन → सांस्कृतिक क्षरण → 'खोखला गाँव'।

4. शोध पद्धति

4.1 शोध की प्रकृति एवं रूपरेखा

यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) तथा व्याख्यात्मक (Explanatory) दोनों प्रकार की प्रकृति को सम्मिलित करता है। मिश्रित शोध-पद्धति (Mixed Method Research Design) अपनाई गई है जिसमें मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों दृष्टिकोणों का समेकित उपयोग किया गया है।

© 2026 डॉ. सत्यमित्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4.2 अध्ययन क्षेत्र एवं नमूना चयन

अध्ययन उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र के छह गाँवों — चक्रपुर, डौलीना, चौखुटिया, स्यालदे, क्कारब और भटरोज — में किया गया। ये गाँव भौगोलिक विविधता (दूरस्थ/अर्ध-शहरी) एवं प्रवासन की विभिन्न तीव्रताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे तुलनात्मक विश्लेषण संभव हुआ।

नमूना आकार कुल 120 परिवार रखा गया। नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन (Purposive Sampling) और हिमकंदुक पद्धति (Snowball Sampling) का उपयोग किया गया। चयन मानदंड: परिवार में कम-से-कम एक सदस्य प्रवास पर हो एवं गाँव में स्थायी निवास हो।

4.3 डेटा संकलन

प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए प्रश्नावली (Questionnaire), गहन साक्षात्कार (In-depth Interviews — 30 उत्तरदाता), फोकस ग्रुप डिस्कशन (FGD) एवं प्रत्यक्ष अवलोकन का उपयोग किया गया। द्वितीयक डेटा स्रोतों में Census of India (2011), उत्तराखंड सरकार की रिपोर्टें, ICIMOD अध्ययन तथा शोध-पत्र एवं जर्नल शामिल हैं।

4.4 डेटा विश्लेषण एवं वैधता

मात्रात्मक विश्लेषण में प्रतिशत एवं तुलनात्मक तालिकाओं का उपयोग किया गया। गुणात्मक विश्लेषण के लिए थीमैटिक विश्लेषण (Thematic Analysis) अपनाया गया जिसमें सामाजिक विघटन, परिवार विखंडन, बुजुर्ग अकेलापन, सांस्कृतिक क्षरण और महिला-प्रधान परिवार प्रमुख थीम थीं। वैधता हेतु पायलट अध्ययन, त्रिकोणीकरण एवं पार-सत्यापन की गई।

5. विश्लेषण एवं परिणाम

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि इन गाँवों में प्रवासन एक सामान्य सामाजिक प्रवृत्ति बन चुका है। लगभग 60–65 प्रतिशत परिवारों में कम-से-कम एक सदस्य प्रवास पर है, जिससे ग्रामीण समाज की मूल संरचना में गहरा असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

5.1 जनसंख्या संरचना:

गाँवों की जनसंख्या संरचना में गंभीर असंतुलन उत्पन्न हो चुका है। 20–40 वर्ष आयु वर्ग के युवा बड़ी संख्या में प्रवास कर चुके हैं।

तालिका 1: आयु-आधारित जनसंख्या संरचना

आयु वर्ग	प्रतिशत
0–19 वर्ष	28%
20–40 वर्ष	18%
40–60 वर्ष	26%
60+ वर्ष	28%

युवा वर्ग का प्रतिशत अत्यंत कम (18%) होना और बुजुर्ग तथा आश्रित आबादी का अनुपात बढ़ना गाँवों की उत्पादक क्षमता के ह्रास को दर्शाता है — यही जनसांख्यिकीय रिक्तीकरण ('Demographic Hollowing') है।

5.2 परिवार संरचना का विखंडन

तालिका 2: परिवार संरचना

परिवार प्रकार	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	32%
एकल परिवार	68%

संयुक्त परिवारों की परंपरा कमजोर हो रही है। साक्षात्कारों में उत्तरदाताओं ने बताया कि 'अब परिवार साथ नहीं रहते, केवल आर्थिक संबंध रह गए हैं।' 'वितरित परिवार' (distributed families) की प्रवृत्ति उभर रही है — सदस्य भौगोलिक रूप से बिखरे हुए हैं।

5.3 ग्रामीण समाज का स्त्रीकरण (Feminization)

तालिका 3: महिला-प्रधान परिवार

संकेतक	प्रतिशत
पुरुष प्रवास	62%
महिला-प्रधान परिवार	54%

महिलाएँ अब कृषि, परिवार प्रबंधन और सामाजिक कार्यों की मुख्य जिम्मेदार बन गई हैं। यह 'Forced Empowerment' की स्थिति है — भूमिका का विस्तार तो हुआ, किंतु संसाधनों और समर्थन के बिना।

5.4 बुजुर्गों का अकेलापन

तालिका 4: बुजुर्गों की आवासीय स्थिति

स्थिति	प्रतिशत
अकेले रहने वाले बुजुर्ग	48%
केवल जीवनसाथी के साथ	32%
परिवार के साथ	20%

48% बुजुर्ग अकेले हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि आर्थिक सहायता (remittance) सामाजिक समर्थन का विकल्प नहीं बन सकती। सामाजिक-भावनात्मक अलगाव और स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव इनकी प्रमुख समस्याएँ हैं।

5.5 सामुदायिक जीवन का क्षरण

तालिका 5: सामुदायिक सहभागिता — परिवर्तन

गतिविधि	पहले	वर्तमान
ग्राम सभा	सक्रिय एवं उच्च	निम्न एवं निष्क्रिय
श्रमदान	नियमित	दुर्लभ
सामाजिक कार्यक्रम	सक्रिय	सीमित

सामाजिक पूँजी (social capital) में स्पष्ट गिरावट आई है। यह Durkheim की 'mechanical solidarity' के कमजोर होने का संकेत है। समुदाय अब सामूहिक समस्याओं का हल मिलकर नहीं निकाल पाता।

© 2026 डॉ. सत्यमित्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5.6 सांस्कृतिक क्षरण और आर्थिक निर्भरता

लोक-उत्सवों एवं पारंपरिक आयोजनों में भागीदारी घट रही है, कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग सीमित हो रहा है और जागर, मेले जैसी लोक परंपराएँ लुप्तप्राय हो रही हैं। नई पीढ़ी शहरी संस्कृति से अधिक प्रभावित है — यह पहचान (identity) के संकट का संकेत है।

आर्थिक स्तर पर, कृषि भूमि परती हो रही है, स्थानीय उत्पादन घट रहा है और अर्थव्यवस्था 'remittance dependent' बन गई है। यह आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक खतरा है।

तालिका 6: भौतिक रिक्तता

स्थिति	प्रतिशत
आंशिक खाली घर	45%
पूरी तरह बंद घर	22%

6. चर्चा

अध्ययन के निष्कर्षों का सैद्धांतिक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि कुमाऊँ क्षेत्र में 'खोखले गाँव' एक बहु-आयामी सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम हैं जिसे किसी एकल सिद्धांत से नहीं समझा जा सकता।

Lee (1966) का Push-Pull सिद्धांत प्रवासन के मूल कारणों को समझाता है — कृषि संकट और अवसरों की कमी 'push' कारक हैं जबकि शहरी रोजगार और शिक्षा 'pull' कारक। लगभग 60% परिवारों में प्रवासन का कारण रोजगार और शिक्षा पाया गया, जो इस सिद्धांत की पुष्टि करता है।

Massey (1990) का 'cumulative causation' सिद्धांत यह समझाता है कि एक बार प्रवासन शुरू होने के बाद social network के माध्यम से यह self-reinforcing process बन जाता है — गाँव में प्रवासन एक 'सामान्य सामाजिक रणनीति' बन जाता है।

Durkheim के Social Solidarity Theory के परिप्रेक्ष्य में, 'खोखले गाँव' उस संक्रमण (transition) का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ पारंपरिक 'mechanical solidarity' समाप्त हो रही है और आधुनिक 'organic solidarity' विकसित नहीं हो पाई है — समाज एक 'transition crisis' में है।

अध्ययन में एक महत्वपूर्ण विरोधाभास भी सामने आया: प्रवासन आर्थिक रूप से लाभकारी है (remittance, शिक्षा) किंतु सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विघटनकारी है। इसे 'Development vs Disintegration Paradox' कहा जा सकता है — आर्थिक विकास हमेशा सामाजिक स्थिरता को सुनिश्चित नहीं करता।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कुमाऊँ क्षेत्र में 'खोखले गाँव' एक उभरती हुई गंभीर समाजशास्त्रीय समस्या के रूप में सामने आ रहे हैं। यह समस्या केवल जनसंख्या-ह्रास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज की संरचना, कार्यप्रणाली और सांस्कृतिक निरंतरता में गहरे परिवर्तन का संकेत है।

प्रवासन ने तीन प्रमुख आयामों में कुमाऊँ के ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया है: (i) सामाजिक विघटन — परिवारों का विखंडन, सामुदायिक सहभागिता में गिरावट और सामाजिक नियंत्रण का कमजोर होना; (ii) सांस्कृतिक क्षरण — लोक परंपराओं, भाषा और सामुदायिक पहचान का संकट; तथा (iii) आर्थिक निर्भरता — कृषि गतिविधियों में गिरावट और remittance-dependent अर्थव्यवस्था।

अतः 'खोखले गाँव' केवल भौगोलिक या जनसांख्यिकीय स्थिति नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज के समग्र परिवर्तन का संकेत हैं। यदि इस प्रक्रिया को समय रहते नहीं समझा गया और उचित नीतिगत हस्तक्षेप नहीं किए गए, तो यह समस्या और अधिक गहराई से ग्रामीण समाज को प्रभावित कर सकती है। 'खोखले गाँव' ग्रामीण भारत के लिए एक चेतावनी (warning signal) हैं — विकास केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी संतुलित होना चाहिए।

8. नीतिगत सुझाव

'खोखले गाँव' की समस्या के समाधान के लिए समेकित (integrated), क्षेत्र-विशेष (context-specific) तथा समुदाय-केंद्रित (community-based) नीतिगत दृष्टिकोण आवश्यक है:

- स्थानीय रोजगार एवं उद्यमिता विकास: कृषि विविधीकरण (ऑर्गेनिक खेती, जड़ी-बूटी), लघु उद्योग, ग्रामीण स्टार्टअप और स्वरोजगार योजनाओं का विस्तार।
- ग्रामीण पर्यटन: होमस्टे मॉडल, ईको-टूरिज्म एवं सांस्कृतिक पर्यटन से स्थानीय आय के नए स्रोत और reverse migration को प्रोत्साहन।
- बुजुर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा: ग्रामीण वृद्ध सहायता केंद्र, मोबाइल स्वास्थ्य सेवाएँ एवं पेंशन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन।
- महिला सशक्तिकरण: स्वयं सहायता समूह (SHGs) को मजबूत करना, कौशल विकास प्रशिक्षण एवं वित्तीय साक्षरता — 'forced empowerment' से 'real empowerment' की ओर।
- सांस्कृतिक संरक्षण: लोक-उत्सवों का पुनर्जीवन, कुमाऊँनी भाषा एवं लोक-साहित्य का संरक्षण, स्कूल स्तर पर सांस्कृतिक शिक्षा।
- डिजिटल एवं भौतिक अवसंरचना: सड़क, बिजली, पानी के साथ इंटरनेट कनेक्टिविटी, टेलीमेडिसिन और ई-गवर्नेंस सेवाओं का विस्तार।
- डेटा आधारित नीति निर्माण: Migration Monitoring System, GIS-आधारित मैपिंग और गाँव-स्तरीय डेटा संग्रह द्वारा लक्षित (targeted) नीतियाँ।

संक्षेपतः यदि विकास को स्थानीय, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील नहीं बनाया गया, तो 'खोखले गाँव' भविष्य में ग्रामीण भारत की एक व्यापक सामाजिक समस्या बन सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Chandra N, Mukherjee A. A study of migration pattern in the Kumaun hills and associated socio-economic factors. Int J Soc Sci Stud. 2018;6(4):45–56.
2. Deshingkar P, Grimm S. Internal migration and development: A global perspective. Geneva: International Organisation for Migration; 2005.
3. Durkheim E. The division of labour in society. New York: Free Press; 1893.

© 2026 डॉ. सत्यमित्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. Government of India. District census handbook: Almora (Uttarakhand). New Delhi: Office of the Registrar General; 2011.
5. Government of Uttarakhand. Rural out-migration in Uttarakhand: Interim report. Dehradun: Department of Rural Development; 2018.
6. Government of Uttarakhand. Migration report: Almora district. Dehradun: Department of Planning; 2020.
7. Kumar R. Major causes of migration from hills to plains: A case study of Almora district. Int J Geogr Reg Plan. 2017;5(3):28–35.
8. Lee ES. A theory of migration. Demography. 1966;3(1):47–57.
9. Long H, Liu Y, Li X, Chen Y. Building new countryside in China: A geographical perspective. Land Use Policy. 2012;29(4):797–800.
10. Massey DS. Social structure and cumulative causation of migration. Popul Index. 1990;56(1):3–26.
11. Pathak S, Pant L, Maharjan A. De-population trends, patterns and effects in Uttarakhand. Kathmandu: ICIMOD; 2022.
12. Ravenstein EG. The laws of migration. J Stat Soc. 1885;48(2):167–235.
13. Ravenstein EG. The laws of migration (Second paper). J R Stat Soc. 1889;52(2):241–305.
14. Thomas WI, Znaniecki F. The Polish peasant in Europe and America. Chicago: University of Chicago Press; 1918–1920.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the corresponding author

डॉ. सत्यमित्र सिंह समाजशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, उत्तराखंड में कार्यरत। इनके शोध क्षेत्र ग्रामीण समाज, प्रवासन, सामाजिक परिवर्तन और विकास अध्ययन हैं। इन्होंने अनेक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं तथा शिक्षण और अनुसंधान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

© 2026 डॉ. सत्यमित्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/